प्रकाशित: 11 मई 2018 को नेशनलिस्ट ऑनलाइन डॉट कॉम में प्रकाशित -

मोटे अनाजों के जरिए कृषि क्षेत्र को मजबूत करने में जुटी मोदी सरकार !

रमेश कुमार दुबे

श में किसानों की बदहाली की सबसे बड़ी वजह है , कांग्रेसी शासन काल की एकांगी कृषि विकास नीति। आज अनाज के भरे हुए गोदाम के बावजूद देश में कुपोषण की व्यागपकता है , तो इसका कारण भी आजादी के बाद की कांग्रेसी सरकारों द्वारा लम्बे समय तक चलाई गयीं खेती की अदूरदर्शी नीतियां हैं।

हरित क्रांति की सबसे बड़ी खामी यह रही कि इसने एकफसली खेती को बढ़ावा दिया। इससे फसल चक्र रुका और मिट्टी की उर्वरता में ह्रास आया। इसकी भरपाई के लिए रासायनिक उर्वरकों का इस्तेममाल बढ़ा। रासायनिक उर्वरकों के आयात में घोटाले भी खूब हुए। कांग्रेसी प्रधानमंत्री स्वेर्गीय नरसिम्हा राव के समय का यूरिया घोटाला आज भी लोगों को याद है। एकफसली खेती का सबसे बड़ा दुष्प रिणाम यह हुआ कि इससे खेती व थाली की विविधता घटी जिसका परिणाम कुपोषण और तरह-तरह की बीमारियों के रूप में सामने आया।

कांग्रेसी नीतियों की दूसरी खामी यह रही कि इसमें उत्पारदन पर तो ध्याान दिया गया , लेकिन उसके भंडारण-विपणन-प्रसंस्कीरण पर ध्या न नहीं दिया गया। यही कारण है कि किसानों को उनकी उपज की वाजिब कीमत नहीं मिल पाई। गेहूं-धान जैसी चुनिंदा फसलों की खेती की प्रधानता से मोटे अनाजों, दलहनी और तिलहनी फसलों की खेती प्रभावित हुई और इनका आयात बढ़ा।

अब मोदी सरकार इस ऐतिहासिक भूल को सुधारने की कवायद में जुटी है। दलहनी खेती को बढ़ावा देने के सकारात्मिक नतीजे मिले और देश में दालों का बंपर उत्पा दन हुआ। इस कामयाबी को सरकार अब तिलहनों और मोटे अनाजों के मामले में दुहराने जा रही है। तिलहन उत्पाददन को बढ़ावा देने से न सिर्फ खाद्य तेल का घरेलू उत्पाेदन बढ़ेगा, बल्कि हर साल खाद्य तेल के आयात पर खर्च होने वाले एक लाख करोड़ रूपये की बचत भी होगी।

पानी की बढ़ती किल्लात , मौसमी उतार-चढ़ाव , गेहूं-धान के भंडारण की समस्याआ, कुपोषण की व्या पकता किसानों की बदहाली आदि को देखते हुए मोदी सरकार मोटे अनाजों के उत्पा दन को बढ़ावा देने के लिए मिशन की शुरूआत कर रही है। यह मिशन अगले दो साल अर्थात 2018-19 और 2019-20 तक चलेगा। मोदी सरकार उत्पाददन के साथ-साथ इन उपजों के प्रसंस्क रण पर भी ध्यावन दे रही है ताकि किसानों को उपज बेचने में कठिनाई न हो। इसके लिए देश के 11 राज्योंक के 115 किसान संगठनों को जोड़ा जा रहा है।

इसके तहत किसानों को उन्ननत प्रजाति का प्रमाणिक बीज उपलब्धह कराया जाएगा। पहले चरण में 14 राज्योंं के 202 जिलों में ज्वास, बाजरा, सावां-कोदो जैसे अनाजों की बड़े पैमाने पर खेती शुरू की जाएगी। मोटे अनाजों की खेती को बढ़ावा देने के लिए 2018 को **मोटे अनाज का वर्ष** घोषित किया गया है।

मोटे अनाजों के उत्पांदन में बढ़ोत्त री से न सिर्फ खाद्य व पोषण सुरक्षा सुनिश्चिषत होगी बल्कि गेहूं-चावल के पहाड़ से भी मुक्तित मिल जाएगी। इतना ही नहीं, आगे चलकर विविधतापूर्ण खेती को बढ़ावा मिलेगा जिससे मिट्टी की उर्वरता में इजाफा होगा और रासायनिक उर्वरकों-कीटनाशकों के इस्तेामाल में कमी आएगी।

इसका सबसे ज्यागदा लाभ वर्षाधीन क्षेत्रों को मिलेगा जहां सिंचाई की सुनिश्चिकत व्यववस्था नहीं है। गौरतलब है कि आजादी के सत्तार वर्ष बाद भी देश की आधी से ज्यांदा कृषि भूमि बारिश के भरोसे है। मोदी सरकार इन इलाकों में मोटे अनाजों की खेती को बढ़ावा दे रही है ताकि पानी की किल्ल त को काबू में किया जा सके। गौरतलब है कि मोटे अनाजों को पानी की बहुत कम जरूरत पड़ती है।

इसके साथ-साथ सरकार सिंचाई की आधुनिक विधियों को बढ़ावा दे रही है ताकि पानी की बरबादी कम से कम हो। स्पाष्टआ है मोदी सरकार मोटे अनाजों के जरिए हरित क्रांति के दायरे को बढ़ाकर देशव्यामपी बना रही है। सबसे बढ़कर उत्पा दन के साथ-साथ भंडारण-प्रसंस्कथरण-विपणन पर भी ध्यावन दिया जा रहा है ताकि खेती मुनाफे का सौदा बने।

(लेखक केन्द्रीय सचिवालय में अधिकारी हैं। ये उनके निजी विचार हैं।)